परमात्म ऊर्जा

ऐसे अनुभव करेंगे जैसे कोई साकार में साथ होता है तो फिर कब भी अपने में अकेलापन व कमज़ोरीपन अनुभव नहीं होती है। इस रीति से जब सर्वशक्तिवान शिव और शक्ति दोनों की स्मृति रहती है तो चलते-फिरते बिल्कुल ऐसे अनुभव करेंगे जैसे साकार में साथ हैं और हाथ में हाथ है। गाया जाता है ना - साथ और हाथ। तो साथ है बुद्धि की लगन और सदा अपने साथ श्रीमत रूपी हाथ अनुभव करेंगे। जैसे कोई के ऊपर किसका हाथ होता है तो वह निर्भय और शक्ति रूप हो कोई भी मुश्किल कार्य करने को तैयार हो जाता है। इस रीति जब श्रीमत रूपी हाथ अपने ऊपर सदा अनुभव करेंगे तो कोई भी मुश्किल परिस्थिति व माया के विघ्न से घबरायेंगे नहीं। हाथ की मदद से, हिम्मत से सामना करना सहज अनुभव करेंगे। इसके लिए चित्रों में भक्त और भगवान का रूप क्या दिखाते हैं?

शक्तियों का चित्र भी देखेंगे तो वरदान का हाथ भक्तों के ऊपर दिखाते हैं। मस्तक के ऊपर हाथ दिखाते हैं। इसका अर्थ भी यही है कि मस्तक अर्थात् बुद्धि में सदैव श्रीमत रूपी हाथ अगर है तो हाथ और साथ होने कारण सदा विजयी हैं। ऐसा सदैव साथ और हाथ का अनुभव करते हो? कितनी भी कमज़ोर आत्मा हो लेकिन साथ अगर सर्वशक्तिवान है तो कमज़ोर आत्मा में भी स्वतः ही बल भर जाता है। कितना भी भयानक स्थान है लेकिन साथी शूरवीर है तो कैसा भी कमज़ोर शूरवीर हो जाएगा। फिर कब माया से घबरायेंगे नहीं। माया से घबराने व माया का सामना ना करने का कारण साथ और हाथ का अनुभव नहीं करते हो। बाप साथ दे रहे हैं, लेकिन लेने वाला न लेवे तो क्या करेंगे? जैसे बाप बच्चे का हाथ पकड़ कर उनको सही रास्ते पर लाना चाहते हैं लेकिन बच्चा बार-बार हाथ छुड़ा कर अपनी मत पर चले तो क्या होगा? मूंझ जाएगा। इस रीति एक तो बुद्धि के संग और साथ को भूल जाते हो और श्रीमत रूपी हाथ को छोड़ देते हो, तब मूँझते हो व उलझन में आते हो अथवा कमज़ोर बन जाते हो। माया भी बड़ी चतुर है। कभी भी वार करने के लिए पहले साथ और हाथ छुड़ा कर अकेला बनाती है। जब अकेले कमज़ोर पड़ जाते हो तब माया वार करती है। वैसे भी अगर कोई दुश्मन किसी के ऊपर वार करता है तो पहले उनको संग और साथ से छुड़ाते हैं। कोई ना कोई युक्ति से उनको अकेला बना कर फिर वार करते हैं। तो माया भी पहले साथ और हाथ छुड़ा कर फिर वार करेगी। अगर साथ और हाथ छोड़ो ही नहीं तो फिर सर्वशक्तिवान साथ होते माया क्या कर सकती है? मायाजीत हो जायेंगे। तो साथ और हाथ को कब छोड़ो नहीं। ऐसे सदा मास्टर सर्वशक्तिवान बनकर के चलो।

कथा सरिता

मेहनत और प्रयास से मुश्किल का हल

एक किशोर नाम का लड़का जब छोटा था तब उसके पिता की ज़मीन साहूकारों ने हड़प ली, इसलिए गम में किशोर के पिता की मृत्यु हो गई थी। किशोर की माँ लोगों के घर जा-जाकर काम किया करती थी। किशोर की माँ ने उसे पाला और अपनी सारी ख्वाहिशों को भूलकर किशोर को बड़ा किया। किशोर की माँ को लोग अक्सर लाचारी की नज़र से देखते थे। क्योंकि शादी के कुछ सालों बाद ही किशोर के पिता की मृत्यु हो गई थी। किशोर पढ़ता-लिखता नहीं परंतु किशोर की माँ को अपने बेटे से बहुत ज़्यादा उम्मीदें थीं कि वह अपने पिता के अपमान का बदला लेगा।

पर समय के साथ किशोर की माँ समझ गई कि किशोर अपने पिता के अपमान को भूल गया है इसलिए वह पढ़ता-लिखता नहीं है। इसलिए किशोर की माँ ने फैसला किया कि वह किशोर को शहर भेज देंगी। किशोर की माँ के लिए इतना पैसा जोड़ना मुश्किल था इसलिए उन्होंने अपने गहने बेच दिए जो कि उनकी आखिरी पूंजी थे।

किशोर शहर चला गया और वह वहाँ भी पढ़ाई-लिखाई नहीं किया करता था। उसे अपनी माँ पर ज़रा भी तरस नहीं आता था जबकि किशोर की माँ बहुत मेहनत किया करती थी।

जब 11वीं कक्षा की परीक्षा के लिए किशोर से "तीन हज़ार मांगे गए तब किशोर ने अपनी माँ को कहा कि माँ मुझे दस हज़ार की ज़रूरत है" किशोर की माँ ने कुछ दिनों बाद दस हज़ार रूपए भेज दिए।

कुछ समय बाद गाँव के सरपंच का फोन किशोर के पास आया और सरपंच ने उसे कहा कि तुम्हें एक बार अपनी माँ से मिलने ज़रूर आना चाहिए शायद तुम जानते नहीं हो तुम्हारी माँ किस स्थिति से गुज़र रही है।

यह सुनकर किशोर को अजीब लगा और वह दूसरे दिन ही गाँव पहुंच गया। उसने देखा कि किशोर की माँ की तबीयत बहुत ज़्यादा खराब है मानो ज़िंदगी के आखिरी लम्हे जी रही हो।

वह चाहती तो अपना इलाज करवा सकती थी। पर उन्होंने किशोर को वह पैसे दे दिए जबकि किशोर ने सात हज़ार रूपए ज़्यादा बताए थे।

यह देख किशोर की आँखों में आंसू आ गए। तब गाँव के लोगों ने बताया कि तुम्हारी माँ की मानसिक स्थिति भी ठीक नहीं है वह सबसे यह कहती रहती है कि 'मेरा बेटा अफसर बनकर आएगा' यह सुनकर किशोर रोने लगा। क्योंकि वह शहर में भी पढ़ाई नहीं करता था और अक्सर खर्च करने के लिए माँ से फालतू खर्ची मांगता रहता था। किशोर को खुद पछतावा हो रहा था कि वह अपनी माँ की तकलीफों को न समझ सका और जीवन का आनंद लेता रहा।

सभी गाँव वाले चले गए, किशोर अपनी माँ के पास बैठा था और बस रोए जा रहा था मानों उसने जीवन की सबसे बड़ी गलती की हो। वह कुछ दिनों तक गाँव में रूका और परीक्षा से पहले शहर चला गया उसने खुद को पूरी तरह बदल दिया और दिन-रात पढ़ने लगा।

उसने खुद को कमरे में बंद कर दिया और सब पढ़ता ही रहता था। उसने सबसे बोलना बंद कर दिया और परीक्षा पास करी। वह शहर में पढ़ाई के साथ-साथ फूड डिलीवरी की नौकरी भी करने लगा।

जिससे उसकी पढ़ाई का खर्चा निकल जाता था और वह कुछ पैसे अपनी माँ को भी भेज देता था। वह कुछ दिनों बाद माँ से मिलने जाता रहता था।

इस प्रकार वह मेहनत करता गया और एक समय ऐसा आया जब उसने अपनी माँ के पास खत भेजा, जिसमें लिखा था माँ मैं आईएएस ऑफिसर बन गया हूँ। कुछ दिनों में गाँव आ जाऊंगा यह पढ़कर किशोर की माँ ने सबको चिल्ला-चिल्ला कर बताया। और बहुत रोई, उसकी खुशी देख गाँव के लोगों की आँखों में भी आँसू आ गए कि एक माँ की मेहनत रंग लाई।

सीखः इस कहानी से हमें यह सीख मिलती है कि माँ-बाप के त्याग और कठिनाइयों को समझना चाहिए। मेहनत और प्रयास से किसी भी मुश्किल को हल किया जा सकता है। जिसके लिए हमारा शिक्षित होना बहुत ज़रूरी है।

कूच बिहार-प.बंगाल। ब्रह्माकुमारीज़ की प्रथम मुख्य प्रशासिका जगदम्बा सरस्वती(मम्मा) के पुण्य स्मृति दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में कूच बिहार कॉलेज एवं अलिपुरद्वार कॉलेज के प्रोफेसर डॉ. हिमांशु, डॉ. सुशोभन, डॉ. अनिर्बन, भास्वती बहन, ब्र.कु. संपा बहन व डॉ. स्वपन भाई सहित अन्य भाई-बहनें मौजूद रहे।

औरंगाबाद-बिहार। ब्रह्माकुमारीज़ एवं जिला विधिक सेवा प्राधिकार के संयुक्त तत्वावधान में विधिक सेवा सदन में आयोजित विशेष जागरुकता अभियान सह सेमिनार के पश्चात् समूह चित्र में अधिवक्ता राधेश्याम सिंह, ब्र.कु. उर्मिला बहन, स्थानीय सेवाकेंद्र संचालिका ब्र.कु. सविता दीदी, जिला विधिक सेवा प्राधिकार के सचिव सुकुल राम, ब्र.कु. संगीता बहन, ब्र.कु. सुषमा बहन तथा अन्य।

रूपनगर-पंजाब। दिव्यांग सेवा अभियान के दौरान माता सत्या देवी वृद्ध आश्रम में सीनियर सिटीजंस को ईश्वरीय संदेश देते हुए ब्र.कु. प्रीति बहन, ब्र.कु. मीना बहन, ब्र.कु. सतबीर भाई, ब्र.कु. कर्मचंद भाई व अन्य।

बालीचौकी मंडी-हि.प्र.। रेड क्रॉस मेले में नशा मुक्ति चित्र प्रदर्शनी का उद्घाटन करने के पश्चात् एस.डी.एम. देवी राम जी को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. दक्षा बहन और ब्र.कु. टीना बहन। साथ हैं अन्य भाई-बहनें।

गिद्दड़बाहा-पंजाब। बार एसोसिएशन में आयोजित आध्यात्मिक कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में प्रधान स्नेहप्रीत मान एवं सेक्रेट्री कंवर हंसपाल, सीनियर लीडर आम आदमी पार्टी हरदीप जी, सीनियर एडवोकेट्स, ब्र.कु. सुखविंदर बहन व ब्र.कु. रेखा बहन।